M. A. Semester IV
Philosophy CC - 14
Unit - I

Prof. (Dr.) Ragini Kumari
Prof. & Head
P. G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Ways of Salvation according to Buddhism
(Part - I.)

Buddhism का विकास एक मानवता धर्म के रूप में हुआ है, जहाँ मानव को सर्वोच्च स्थान प्रदान कर उसे एक आत्मनिर्भर सत्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अपनी उल्लेखनीय विशेषताओं के अन्तर्गत एक तरफ तो यह धर्म ईश्वर की सत्ता का निषेध करता है, तथा साथ ही आदयात्मवाद की धारणा का पोषण करता है, वहीं दूसरी तरफ यह मुक्ति की भी एक विशिष्ट अवधारणा प्रस्तुत करता है। सामान्य ईश्वरवादी एवं आत्मवादी धर्मों से भिन्न हो यह मुक्ति का अर्थ आत्मा की मुक्ति से नहीं लेता, अपितु मुक्ति का अर्थ मानव मुक्ति से है।

बौद्ध धर्म में इस निर्वाण का केन्द्रीय महत्व है। निर्वाण ही बौद्ध धर्म का अन्तिम लक्ष्य है। अन्य धर्मों के समान बौद्ध धर्म भी मोक्ष तुल्य निर्वाण प्राप्ति के लिए विशिष्ट मार्ग की व्यवस्था करता है, जिसका स्पष्ट विवरण इसने अपने चतुर्थ आर्य सत्य के अन्तर्गत किया है। यहाँ इसकी व्याख्या के लिए हम निम्न अध्ययन का सहारा लेंगे —

बौद्ध धर्म के प्रणेता एवं प्रवर्तक महात्मा बुद्ध के द्वारा प्रतिपादित चार आर्य सत्य मानव की व्यवहारिक एवं वास्तविक स्थिति का स्पष्टीकरण है। ये चारों आर्य सत्य जगत में स्वरूपगत रूप से विद्यमान दुःख की मीमांसा प्रस्तुत करते हैं।

तृतीय आर्य सत्य इसी दुःख के निरोध अर्थात् निर्वाण की व्याख्या करता है तथा चतुर्थ आर्य सत्य दुःख निषेध के मार्ग को स्पष्ट करता है। इस मार्ग के आठ अंग हैं, जिसके कारण इसे 'आर्य अष्टांगिक मार्ग' की संज्ञा दी गयी है। यह अष्टांगिक मार्ग वस्तुतः प्रज्ञा, शील तथा समाधि का मार्ग है। मार्ग की विशिष्टता यह है कि इस मार्ग का अनुसरण रागी एवं वैरागी अर्थात् गृहस्थ एवं सन्यासी दोनों ही कर सकते हैं।

यह मार्ग वस्तुतः एक मध्यम मार्ग है इससे आत्मा, शरीर तथा स्वयं को कष्ट देना- दोनों का ही निरोध है। यह मार्ग वस्तुतः आध्यात्मिक एवं नैतिक दृष्टि से एक महत्तम मार्ग है। इस सम्बन्ध में 'रीज डेविड्स' की निम्न टिप्पणी उल्लेखनीय हो सकती है।

"दो ऐसी सीमाएं हैं जो कि आगे बढ़ने की कभी अनुसरण नहीं करनी चाहिए, एक तो इन्द्रिय विषयों के सुखों तथा वासनाओं की मुक्ति की आदत जो कि तृप्ति खोजने का एक निम्न असंस्कृत, व्याण्य एवं लाभहीन मार्ग है तथा दूसरी आत्मा को कष्ट देने की आदत जो कि कष्टमय, व्याण्य तथा व्यर्थ है। तथागत ने एक मध्यम मार्ग का पता लगाया है। एक ऐसा मार्ग जो कि आँख खोलता है तथा बुद्धि प्रदान करता है, जो शक्ति अन्तर्दृष्टि, उच्च प्रज्ञा तथा निर्वाण की ओर ले जाता है।" (Early Buddhism, - P.51)

बुद्ध द्वारा प्रतिपादित यह अष्टांगिक मार्ग आठ सोपानों में प्रस्तुत हुआ है—

(1) सम्यक् दृष्टि —— सम्यक् दृष्टि अष्टांगिक मार्ग की पहली सीढ़ी है। इसका अर्थ है ठीक अर्थात् यथार्थ दृष्टि। वस्तुओं का जो स्वरूप है, उसका उसी रूप में ज्ञान दर्शन होना ही सम्यक् दृष्टि है। लोक-परलोक है, ...

है, दान है, भत है, अच्छे बुरे कर्मों का फल - विपाक है, ऐसा ज्ञान होना ही सम्यक्दृष्टि है। बौद्ध धर्म के प्रमुख " अभिधम्म पिटक के विभग ग्रन्थ में चार आर्य सत्यों के ज्ञान को सम्यक्दृष्टि की संज्ञा दी गयी है। वस्तुत: इस धर्म के अनुसार बन्धन तथा दु:ख हमारे अयथार्थ अथवा मिथ्यादृष्टि के कारण होते हैं, यही कारण है कि निर्वाण प्राप्ति के मार्ग में यहाँ पहली आवश्यकता मानी गयी है — मिथ्यादृष्टि को बदलना।" अत: इस क्रम में साधक को सम्यक्दृष्टि का होना पहली आवश्यकता एवं साथ ही शर्त माना गया है।

(2) सम्यक् संकल्प — "सम्यक् संकल्प आष्टांगिक मार्ग का दूसरा अनिवार्य सोपान है, क्योंकि केवल ज्ञान से साधक को अपने लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव नहीं होगी। यहाँ बौद्ध धर्म की स्पष्ट मान्यता है कि साधक को प्राप्त दृष्टि अथवा ज्ञान के अनुसार कार्य करने को संकल्पवान भी होना चाहिए। बौद्ध धर्म के अनुसार सम्यक् संकल्प का अर्थ इन्द्रिय सुखों में लगाव, दूसरी ओर बुरी भावनाओं तथा उनको हानि पहुँचानेवाले विचारों का समूल नाश करने का निश्चय अथवा संकल्प है। वस्तुत: उसके अनुसार आर्य सत्यों के ज्ञान से तभी लाभ प्राप्त होगा, जबकि उसके अनुसार जीवन व्यतीत किया जाए। यहाँ यह महत्वपूर्ण रूप से उल्लेखनीय है कि संकल्प में त्याग, परोपकार तथा करुणा की भावना ही निहित है।

(3) सम्यक् वाक् — 'संकल्प' के बाद 'वाक्' का स्थान आता है। यही कारण है कि सम्यक् वाक् को आष्टांगिक मार्ग की तीसरी सीढ़ी के रूप में स्वीकार किया गया है। बौद्ध धर्म के

निर्धारित (यथोचित) वचनों का प्रयोग सम्यक् वाक् है। वस्तुतः इस धर्म में इस बात पर बल दिया गया है कि सम्यक् संकल्प को केवल मानसिक स्तर पर ही नहीं छोड़ देना चाहिए, बल्कि उसे अपने वचन तथा व्यवहार में भी परिणत करना चाहिए। वास्तव में सम्यक् संकल्प की अभिव्यक्ति अथवा उसका बाह्य रूप सम्यक् वाक् है।

(4) सम्यक् कर्मान्त — आष्टांगिक मार्ग की चौथी सीढ़ी सम्यक् कर्मान्त है। इसका अर्थ यह है कि उचित कर्म का सम्पादन तथा अनुचित एवं गलत कर्मों का परित्याग। वस्तुतः बौद्ध धर्म के अनुसार 'सम्यक् संकल्प' के अन्तर्गत साधकों द्वारा लिए गए संकल्पों को कार्य रूप में परिणत करना ही सम्यक् संकल्प है। बौद्ध दर्शन में पाँच सद्गुणों की चर्चा की गयी है। ये पाँच सद्गुण हैं — अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह एवं साथ ही ब्रह्मचर्य। बौद्ध धर्म के अनुसार अपने शील को सुधारने के लिए इन पाँच सद्गुणों के अनुसार काम करना आवश्यक होता है।

— To be continued —